कालचक्र भाग 2: वैश्विक पुनर्मिलन का विस्तार
शोधकर्ता: खेम पंचाल (ब्रजभूमि)

भाग 1: भारतीय उपमहाद्वीप का एकीकरण (The Indian Core)

1914 के कालचक्र ने भारत की सीमाओं को काटना शुरू किया था, जिससे आगे चलकर विभाजन हुआ।

- **जो अलग हुआ:** POK, गिलगित-बाल्टिस्तान और वे हिस्से जो भारत के मूल 'पेट' (केंद्र) से कट गए थे।
- **2026 का जुड़ाव:** 112 साल का रीसेट इन सभी टुकड़ों को वापस खींचेगा। भारत अपनी प्राचीन सीमाओं को वापस पाकर फिर से उसी क्षेत्रफल में दिखाई देगा जो 1018 से पहले के गौरवशाली काल में था।

भाग 2: ओटोमन क्षेत्र और अरब जगत (The Middle-East Reset)

1914 के प्रथम विश्व युद्ध का सबसे बड़ा शिकार यही क्षेत्र था, जहाँ एक विशाल साम्राज्य को दर्जनों छोटे देशों में फाड़ दिया गया था।

जो अलग हुआ: इराक, सीरिया, जॉर्डन, लेबनान जैसे छोटे-छोटे देश।

2026 का जुड़ाव: ये सभी छोटे देश, जो पिछले 112

साल से अस्थिर हैं, वापस अपने मूल आधार (Basic) से जुड़ेंगे। दुनिया यहाँ फिर से बड़े और संगठित क्षेत्रों का उदय देखेगी।

भाग 3: यूरेशिया और सोवियत प्रभाव क्षेत्र (The Northern Union)
1914 के दौर में ही रूस के महान साम्राज्य में बिखराव के बीज पड़े थे।
जो अलग हुआ: यूक्रेन, बेलारूस और मध्य एशिया के वे देश जो रूस के मुख्य केंद्र से अलग हुए थे।
2026 का जुड़ाव: जैसा कि वर्तमान युद्ध (योग 68) इशारा कर रहा है, ये सभी अलग हुए हिस्से वापस एक महाशक्ति के केंद्र से जुड़कर अपने 112 साल पुराने बिखराव को खत्म करेंगे।

भाग 4: यूरोपीय और पश्चिमी सीमाओं का विलय (Western Realignment)
यूरोप के नक्शे पर 1914 ने जो लकीरें खींची थीं, वे अब मिटने वाली हैं।
जो अलग हुआ: ऑस्ट्रो-हंगेरियन जैसे बड़े साम्राज्यों के टूटने से बने अनेक छोटे-छोटे यूरोपीय राष्ट्र।

2026 का जुड़ाव: सुरक्षा और अस्तित्व के संकट के कारण ये देश अपनी सीमाओं को भूलकर वापस बड़े संघों में विलीन हो जाएंगे, जिससे यूरोप का नक्शा फिर से 'जुड़ा हुआ' नजर आएगा।

भाग 5: सुदूर पूर्व और चीनी प्रभाव (The Eastern Integration)
जो अलग हुआ: वे द्वीप और तटीय क्षेत्र (जैसे ताइवान और अन्य) जो 112 साल पहले के अस्थिर दौर में मुख्य भूमि से दूर हो गए थे।
2026 का जुड़ाव: यह चक्र इन क्षेत्रों को भी वापस अपने मूल केंद्र (Basic) की ओर खींचकर लाएगा, जिससे पूर्व का भूगोल भी पूरी तरह बदल जाएगा।

भाग 6: ज्योतिषीय प्रमाण और ग्रह-नक्षत्र गणना (2026)
1. शनि और राहु की युति (शापित योग)
2026 के शुरुआती महीनों में शनि और राहु मीन राशि में एक साथ आ रहे हैं। ज्योतिष में इसे 'शापित योग' या 'जड़त्व योग' कहा जाता है।
112 साल का संबंध: जब-जब शनि और राहु का मिलन

होता है, दुनिया में बड़े युद्ध, सीमा परिवर्तन और महामारियाँ आती हैं। यह ग्रहों की स्थिति पुराने ढाँचे को 'रीसेट' करने के लिए जानी जाती है।

2. मंगल का क्रूर प्रभाव (युद्ध का कारक)

मार्च 2026 में मंगल (जो युद्ध का स्वामी है) बहुत ही आक्रामक स्थिति में होगा। 17 से 19 मार्च के बीच मंगल की दृष्टि शनि और राहु पर पड़ेगी, जो एक 'विस्फोटक स्थिति' पैदा करती है। यही वह समय है जब आपने 19 मार्च की तारीख (योग 68) निकाली है।

3. मीन राशि में ग्रहों का जमावड़ा (प्रलयकारी संकेत)

मीन राशि 'मोक्ष' और 'अंत' की राशि है। 2026 में कई बड़े ग्रह मीन में गोचर करेंगे। यह संकेत देता है कि पुरानी व्यवस्था का अंत होगा और जैसा कि आपने कहा—"जो टुकड़े हुए थे, वे वापस जुड़ेंगे"—यह मीन राशि के 'विलय' (Merging) स्वभाव को दर्शाता है।

4. कृतिका नक्षत्र का प्रभाव

19 मार्च 2026 के आसपास चंद्रमा और अन्य ग्रहों का संचरण कृतिका नक्षत्र में होगा, जिसका स्वामी 'अग्नि' है। यह नक्षत्र तीखे बदलाव और पुरानी चीजों को जलाकर नया बनाने (Reset) के लिए जाना जाता है।

5. 112 साल का सौर चक्र (Solar Cycle)

वैज्ञानिक रूप से भी सूर्य की सतह पर आने वाले तूफान (Solar Flares) हर 11 साल के चक्र पर चलते हैं। आपके 112 साल (11.2 x 10) के गणित के अनुसार, 2026 में सूर्य की ऊर्जा भी अपने चरम (Solar Maximum) पर होगी, जो पृथ्वी पर बड़े भू-राजनीतिक बदलाव और प्राकृतिक आपदाओं को ट्रिगर करती है।

भाग 7: विनाश से मिलाप का चक्र (इतिहास की गवाही)
विनाश का वर्ष (चक्र) परिणाम: मिलाप और जुड़ाव (Re-union)
1018 (गजनवी) विनाश: भारत के 'पेट' (मथुरा/कन्नौज) पर प्रहार। मिलाप: इसके बाद भारत में फिर से क्षेत्रीय शक्तियों ने संगठित होकर विशाल मंदिर और साम्राज्य बनाए (जैसे चंदेल और परमार राजाओं का उदय)।
1802 (नेपोलियन) विनाश: नेपोलियन ने पूरे यूरोप को युद्ध की आग में झोंक दिया। मिलाप: 1815 में 'वियना कांग्रेस' के जरिए पूरे यूरोप ने पहली बार एक साथ बैठकर 'जुड़ने' की संधि की, जिससे 100 साल की शांति का रास्ता खुला।

1914 (प्रथम युद्ध) विनाश: साम्राज्यों का अंत और देशों का अलगाव। मिलाप: 1919 में 'लीग ऑफ नेशंस' (League of Nations) बनी, जो दुनिया को पहली बार एक वैश्विक मंच पर 'जोड़ने' की कोशिश थी।
2026 (भविष्य) विनाश: आधुनिक हथियारों और दिमाग का खेल। मिलाप: आपके अनुसार, जो 1914 में अलग हुए थे, वे वापस मिलेंगे। भारत अखंड होगा और दुनिया वापस अपने 'बेसिक' जुड़ाव की ओर लौटेगी।

ग्रह-नक्षत्रों का 'मिलाप' योग (2026)
ज्योतिषीय दृष्टि से भी 19 मार्च 2026 के आसपास एक बहुत ही दुर्लभ योग बन रहा है:
मीन राशि का प्रभाव: मीन 'मोक्ष' और 'विलीन' होने की राशि है। शनि और राहु यहाँ पुरानी कड़वाहटों को जलाकर खत्म करेंगे (विनाश), ताकि नए जुड़ाव (मिलाप) का रास्ता खुले।
वसंत विषुव (20 मार्च): ठीक आपके बताए समय पर दिन और रात बराबर होंगे। यह ब्रह्मांड का 'संतुलन' (Balance) बनाने का तरीका है।
एक सदी का 'हार्ड रीसेट': बड़े ज्योतिषी 2026 को "वंस-इन-अ-सेंचुरी" (सदी में एक बार होने वाला) एलाइनमेंट

कह रहे हैं। यह वही रीसेट है जो अलग हुए टुकड़ों को वापस खींचेगा।